

SHRI CHINTAKINDI MALLESHAM

Shri Chintakindi Mallesham, son of a weaver from small village Shirajpet, in Telangana is a Weaver Innovator who relentlessly strives to reduce the pain of his handloom community engaged in Pochampalli tradition of weaving. His seven years endeavour to automate the manual process performed by women of his community to reduce their drudgery has been a boon to the Pochampalli weavers in many aspects.

2. Born on May 10, 1972, Shri Mallesham having passed 6th Class discontinued his studies for pursuing weaving. Later, he passed Tenth exam privately. After a social, financial and technical struggle and suffering for seven long years, he completed the innovation — Asu machine in 2000. The journey for him has been a relentless effort under trying circumstances. Finally, the outcome, it can do without attendance in one and half hours what a woman does in 5 hours. Seven years of untiring pursuit resulted in reducing the pain of Smt. Laxmi-Shri Mallesham's mother and many mothers of his Community. This amazing Asu machine has been named after his mother as "Laxmi Asu Machine". When he saw the effect of spiraled steel prices in 2003, he knew that his community cannot afford the price of Asu machine. A school drop out that he was, he learnt and incorporated electronics into his innovation and brought back the cost to original levels, besides reducing weight and noise and increasing efficiency. Further in 2008, when he learnt about embedded system which enables easy selection of a design and stores them for future use, he learnt and wrote a lower assembly language programme, and retrofitted Asu machines with this device. Yet another achievement for a school dropout.

3. Asu machine is capable of providing 8 saris worth of material in a day against one women's painful output of two. It replaces labour of four women. Complicated and better sari designs are possible with enhanced quality. Employment of Asu machine positively influenced the productivity and marketability as it had removed the capacity constraint of Pochampalli sari industry which was plaguing the industry. In the long history of Pochampalli tradition, first time in 2000, a machine was used for "Asu process". He started a workshop where he produced the Asu machines and supplied to his community.

4. During nineties, when majority of the weavers were giving up the weaving due to non-availability of Asu workers, production was slowly tapering down, a gloom descended on Pochampalli weavers, Shri Mallesham's Asu machine in 2000 brought a new lease of life to all of them. Master weavers bought Asu machines and provided livelihood to thousands of weavers with single loom. Health, employment and productivity visibly increased due to Asu machine. His humble efforts prevented the slow decay of the "Tie & Dye" tradition and revived the industry. Impact of Asu machine is immense, permanent and productive to the weaver community.

5. Asu machine has been recognized as the best grassroots innovation which impacted the society the most by NIF-India and MIT, USA by including in Forbes List during 2011. He entered the 'Hall of Fame" organized by Civil Society in 2011 alongwith Samsung Innovation Quotient award. He delivered Ted.com lecture and was also nominated as INK Life Fellow. NABARD awarded him in 2012. On an invitation he visited China for 7 days and interacted with grassroots innovators of China. Kamla Award was conferred on him by Craft Council, India in 2015. During 2016, Prime Minister declared him as one of the Amazing Indians organized under Times Now. He was nominated as "In residence Scholar' and has been guest at Rashtrapthi Bhavan for 15 days in March 2016. Tedx 2016 lecture of Shri Mallesham in Telugu during September 2016 had gone viral in social media.Print and electronic media has covered his innovation extensively and his story has been included in many books.

6. Shri Mallesham, has been striving sincerely for the betterment of the community, by reducing the pain in weaving and increase productivity. He constantly innovates to improve the various processes of weaving. On his own, he keeps abreast of the latest technologies for the benefit of his community.



श्री चिन्ताकिन्दी मल्लेशम

श्री चिन्ताकिन्दी मल्लेशम तेलंगाना में शिराजपेट नामक एक छोटे से गांव के एक जुलाहे के पुत्र हैं। आप अभिनवकारी बुनकर है, जो पोचमपल्ली बुनाई परंपरा में संलग्न हथकरघा समुदाय की कार्यजनित – पीड़ा को कम करने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। पोचमपल्ली बुनाई में हाथ से काम करने वाली महिलाओं की कार्य की दुरूहता के कारण होने वाले कष्ट को कम करने के लिए इसकी बुनाई प्रक्रिया को स्वयंमेव मशीन संचालित बनाने के लिए सात वर्षों के आपके प्रयास कई मायने में पोचमपल्ली बुनकरों के लिए वरदान सिद्ध हुए हैं।

2. आपका जन्म 10 मई, 1972 को हुआ। आपने छठी कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद बुनाई सीखने के लिए अपनी पढ़ाई छोड़ दी। बाद में, आपने प्राइवेट से दसवीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण की। सामाजिक, वित्तीय एवं तकनीकी संघर्ष और सात वर्षों की लंबी अवधि तक कष्ट झेलने के बाद, आपने अपने अभिनव प्रयोगों के बदौलत वर्ष 2000 में आशु मशीन का निर्माण किया। आपने कठिन परिस्थितियों को झेलते हुए अपने प्रयास निरंतर जारी रखे। अंत में, इसके परिणाम के रूप में आपने वह मशीन बनायी जिससे बिना किसी सहायक के डेढ़ घंटे में उतना काम लिया जा सकता है, जितना एक महिला 5 घंटे में कर सकती है। सात वर्षों के आपके कठिन परिश्रम से निर्मित इस मशीन के द्वारा आपकी माता श्रीमती लक्ष्मी तथा उनके जैसे आपके समुदाय की अन्य कई माताओं को इस कठिन काम से राहत मिली। इस अदभुत आशु मशीन का नाम आपकी माता के नाम पर 'लक्ष्मी आशु मशीन' रखा गया। जब आपने वर्ष 2003 में इस्पात की कीमत में उत्तरोत्तर वृद्धि देखी तो आप भांप गए कि आपके समुदाय के लोग इस आशु मशीन की कीमत नहीं चुका पाएंगे। आपको अपनी स्कूली शिक्षा छोड़नी पड़ी थी, परंतु आपने इलेक्ट्रॉनिक्स सीखा और अपने नवाचार में इसे शामिल कर इसकी लागत को पुन: पहले के स्तर पर ले आए और इसके साथ ही आपने मशीन के वजन और उत्पन्न होने वाली ध्वनी को कम किया और इसकी क्षमता में वृद्धि की। साथ ही, वर्ष 2008 में जब आपने एम्बेडेड सिस्टम के विषय में सीखा, जिससे डिजाइन का सहज चयन करना एवं उसे भविष्य में प्रयोग के लिए स्टोर करना संभव हो पाता है, तब आपने इसे सीखकर लोअर एसेम्बली लैंग्वेज प्रोग्राम लिखा और आशु मशीनों में इस डिवाइस को जोड़ा जो विद्यालय शिक्षा पूरी न करने वाले व्यक्ति के लिए एक और उपलब्धि थी।

3. एक महिला द्वारा दिन भर के कठिन परिश्रम से दो साड़ियों के लिए तैयार की गई सामग्री की तुलना में आशु मशीन में एक दिन में 8 साड़ियों के लिए सामग्री उपलब्ध कराने की क्षमता है। आशु मशीन की रोजगारपरकता से उत्पादकता एवं विपणीयता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा क्योंकि इसने सीमित क्षमता सीमा की समस्या से जूझ रहे पोचमपल्ली साड़ी उद्योग को इस समस्या से निजात दिलाया। पोचमपल्ली साड़ी के लंबे इतिहास में प्रथम बार वर्ष 2000 में 'आशु प्रक्रिया' के लिए एक मशीन का उपयोग किया गया। आपने एक कार्यशाला की शुरूआत की, जहां, आपने आशु मशीनों का उत्पाद किया एवं अपने समुदाय को इसकी आपूर्ति की।

4. नब्बे के दशक में जब अधिकांश बुनकर आशु कामगारों की अनुपलब्धता के कारण बुनाई के काम छोड़ रहे थे, उत्पादन में धीरे-धीरे कमी आई, जिसके कारण पोचमपल्ली बुनकारों के लिए संकट का समय आ गया। वर्ष 2000 में आपकी आशु मशीन ने इन सबको नव-जीवन प्रदान किया। मास्टर बुनकरों ने आशु मशीन लाकर एक करघे से हजारों बुनकरों को आजीविका प्रदान की। आशु मशीन के कारण स्वास्थ्य, रोजगार एवं उत्पादकता में व्यापक वृद्धि हुई। आपके प्रयासों के कारण 'टाई एंड डाई' परंपरा का क्रमिक पतन रूक गया और इस उद्योग को पुनर्जीवन प्राप्त हुआ। बुनकर समुदाय के लिए आशु मशीन के प्रभाव अत्यंत व्यापक, स्थाई एवं उत्पादक सिद्ध हुए हैं।

5. आशु मशीन को एन आई एफ – इंडिया और सबसे उत्तम आधारभूत नवाचार के रूप में मान्यता मिली, जिसने समाज के ऊपर व्यापक प्रभाव डाला तथा वर्ष 2011 में इसे फोर्ब्स सूची में शामिल कर एम आई टी, यू एस ए द्वारा इसके योगदान को सराहा गया। आपको, वर्ष 2011 में सिविल सोसायटी के द्वारा "हॉल ऑफ फेम" में शामिल किया गया तथा आपको सैमसंग इनोवेशन कोसेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपने Ted.com व्याख्यान दिया और आपको आई एन के लाइफ फेलो से नवाजा गया। आपको वर्ष 2012 में नाबार्ड ने पुरस्कृत किया। चीन से आमंत्रण प्राप्त होने पर आपने 7 दिनों के लिए चीन की यात्रा की और चीन के आधारभूत नवाचारियों से वार्ता की। आपको वर्ष 2015 में भारतीय शिल्प परिषद द्वारा कमला पुरस्कार दिया गया। वर्ष 2016 में टाइम्स नॉव द्वारा आयोजित अमेजिंग इंडियन्स में माननीय प्रधानमंत्री ने आपको अमेजिंग इंडियन्स में से एक घोषित किया था। आपको 'इन रेजिडेंस स्कॉलर' के रूप में नामित किया गया और मार्च, 2016 में आप 15 दिनों के लिए राष्ट्रपति भवन में अतिथि के रूप में ठहरे थे। आपके द्वारा सितंबर, 2016 में तेलगु भाषा में दिया गया टेडएक्स 2016 व्याख्यान सोशल मीडिया पर वायरल हो गया था। आपके अभिनवीकरण को प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने व्यापक रूप से कवर किया था तथा आपकी कहानी को कई एक पुस्तकों में शामिल किया गया था।

6. आप बुनाई में होने वाले कष्ट को कम करके तथा उत्पादकता बढ़ाकर इस समुदाय के कल्याण के लिए हृदय से प्रयासरत हैं। बुनाई की विभिन्न प्रक्रियाओं में सुधार लाने के लिए आप लगातार अभिनवीकरण के कार्य में संलग्न रहते हैं। इस समुदाय की भलाई के लिए आप स्वयं अपने प्रयास से अद्यतन प्रौद्योगिकियों की जानकारी जुटाते रहते हैं।